एक दिवसीय 'वेद संगोष्ठी' : वेद विमर्शः विविध आयाम

दिल्ली स्थित राजौरी गार्डन में वैदिक ज्ञान को समर्पित संस्था "वेद संस्थान" एवं "बृहत्तर वैदिक अध्ययन परिषद्" (waves) के युवा वर्ग (तरुण तरंग) के संयुक्त तत्त्वावधान में चौबीस सितंबर दो हजार तैईस(2023) को एक दिवसीय 'वेद संगोष्ठी' का आयोजन किया गया। मुख्यरूप से यह संगोष्ठी वेदसंस्थान के संस्थापक वेदों के अध्यायी, वेद प्रचारक संस्मीकृत संरक्षणके अनुयायी विद्यानन्द विदेह के सुपुत्र स्व०अभयदेव शर्मा के 90 वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित की गयी थी- जिसमें प्रतिष्ठित विद्वानों, कुलपतियों, सेवा निवृत्त प्राध्यापकों एवं शोध-छात्रों द्वारा उत्साहपूर्वक भाग लिया गया। संगोष्ठी का विषय था --वेद विमर्शः विविध आयाम।
इस संगोष्ठी के चार सत्र थे -
इन सत्रों में से प्रथम सत्र के अध्यक्ष वर्तमान में वेदसंस्थान के अध्यक्ष आदरणीय श्रीमान् प्रद्युम्न जी द्वारा की गयी।वह एक सच्चे पितृभक्त एवं अपनी संस्कृति वेदसंरक्षण में निरन्तर संलग्न हैं।उन्होंने सत्र की अध्यक्षता बहुत ही गम्भीरता से करते हुज सत्र को सम्बोधित भी किया।
अगले सत्र के अध्यक्ष डॉ०वेदव्रत आलोक-प्राध्यापक (संस्कृत)दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, रहे ।
→ इस सम्मेलन में वेव्स की अध्यक्षा एवं पूर्व प्रो. मैत्रेयी महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली-डॉ० शशि तिवारी महोदया द्वारा "वेद व्याख्या की पद्धतियाँ" इस विषय पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि 'वेद ज्ञान की शब्दात्मक राशि है। एवं वेद के अर्थों को जानने वाला प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि मन्त्रों के अर्थों को समझने के लिए वेदांगों का ज्ञान अवश्य ही होना चाहिए। उन्होंने इसी क्रम में भारतीय प्राचीन भाष्यकारों जैसे - उव्वट, माधव, मुद्गल आदि के विषय में भी चर्चा की और आधुनिक भाष्यकारों की वेदव्याख्या पद्धति पर भी प्रकाश डाला।

- डॉ. उमा आर्या ने द्वारा 'वेदों में "गुरु-शिष्य संबन्ध" इस विषय पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने बताया कि वैदिककालीन शिक्षा में गुरु शिष्य संबंध विशेष प्रकार के थे, जो कि अत्यंत मधुर, आत्मीय एवं अनुकरणीय थे। गुरु और शिष्य के मध्य भरोसे और जिम्मेदारी के संबंध हुआ करते थे। गुरु शिष्यों के साथ पुत्रवत् भावना से व्यवहार करते थे।* इसी क्रम में तरुण तरंग (वेव्स) की अध्यक्षा एवं एसो. प्रो. डा. करुणा आर्या ने द्वारा " वेदार्थ प्रतिपादन में महर्षि दयानन्द जी के योगदान की विशद चर्चा की ।

तरुण तरंग (वेव्स) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धनंजय आचार्य जी द्वारा निघण्टु शब्द का क्या अर्थ है वह एक दुनिया का पहला शब्दकोश है यह बताते हुए "निघण्टु और निरुक्त के आधार पर वेदमंत्रों का अध्ययन किस प्रकार से किया जाए इस विषय पर प्रकाश डाला । यास्क प्रणीत निरुक्त जिसका आधार निघण्टु है। उन्होंने बताया कि कोश परम्परा का आरम्भ निघण्टु नामक ग्रन्थ से हुआ एवं निघण्टु वैदिक शब्दों का संग्रह है।

- कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार से प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री जी द्वारा : वेदों का एकत्व, त्रित्व, चतुष्टयत्व, अनेकत्व पर विशद व्याख्यान हुआ। उन्होंने बताया कि वेद शब्द के एकवचन प्रयोग से वेद की एकत्व की सिद्धि होती है, - सर्वज्ञानमयो हि सः (वेदः) ।
- वेदत्रयी की सिद्धि में उन्होंने शतपथ ब्राह्मण का प्रमाण दिया -'त्रयो वेदा....।

वेद चतुष्टयत्व का प्रमाण उन्होंने पुरुष सूक्त के मंत्र से दिया "तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि.....। (10/90/9; ऋग्वेद) वेद अनेकत्व पर उन्होंने कहा कि वेद की शाखाएँ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आदि वेद, एक कोटि में ही आते है अतः वेद के अनेकत्व की सिद्धि होती है।

उपसंहार में उन्होंने पुरुष सूक्त के मंत्र का आश्रय लेकर वेद की संख्या चार ही निश्चित की।

प्रो.देवेंद्र मिश्र -श्रीलालबहादुर संस्कृत विश्वविद्यालय । प्रो. मिश्र का विषय था -वेदों में विनियोग प्रकरण। इस विषय पर प्रो. मिश् बहुत ही अच्छी प्रकार सस्वर मन्त्रोच्चारण करते हुए कई उदाहरणों के विनियोग विधि को सरलतया स्पष्ट किया।

एसोसिएट प्रो. मीना कुमारी ने अरण्यानि सूक्त का आधुनिक वनसंरक्षण विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

उपनिदेशक वैदिक शोध वेदसंस्थान - श्रीमान देवकृष्णदास द्वारा- लोक प्रचलित मान्यताओं से दिग्भ्रमित वेद व्याख्यान" । इस विषय पर उदाहरण प्रस्तुत करते हुए व्याख्यान प्रस्तुत किया गया । अनन्तर अन्तिम सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं बृहत्तर वैदिक अध्ययन के महासचिव प्रो.रणजित्बेहेरा द्वारा सम्पन्न की गयी। जिसमें कई शोधपत्र पढ़े गये। प्रो. बेहेरा ने सभी शोधविद्वानों के पत्रों की समीक्षा करते हुए सन्देश दिया कि वेदों का स्वाध्याय निरन्तर करते रहना चाहिए। वेद सभी विद्याओं के मूल हैं। विशेषकर उन्होंने सूर्य की व्युत्पत्ति निरुक्ति करते हुए अनेक ग्रन्थों क उदाहरण प्रस्तुत किये। इस सत्र में प्रमुख शोधपत्र प्रस्तुत हुए-असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ०प्रेम देवली ने वेदव्याकार महर्षि अरविन्द के वेदभाष्य पर तथा अरविन्द की जीवन प्रक्रिया तथा उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला। अनेकों अन्य विद्वानों द्वारा भी विविध पत्र पढ़े गए।

इस सम्मेलन का मुख्य आकर्षण का विषय यह था कि दिल्ली विश्वविद्यालय के शोध-छात्रों एवं स्नातकोत्तर के छात्रों ने भी सहर्ष सोल्लास भाग ग्रहण किया। शोध पत्र के माध्यम से वेद के विविध आयामों की चर्चा की। कुछ उल्लेखनीय नाम हैं - शोध-छात्र मनीष कुमार द्वारा ऋग्वेद में दान-सूक्तों का महत्व प्रतिपादित किया गया । शोध छात्र पिन्टू कुमार द्वारा वेद में रसायन विज्ञान एवं शोध- छात्र देवराज द्वारा वेद में चिकित्सा पद्धति पर प्रकाश डाला गया।शोधछात्रा चंदा- द्वारा भी आधुनिक युग में यज्ञ की प्रसङ्गिकता विषय पर विचार प्रस्तुत किये गये।इस संगोष्ठी में प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के द्वारा भी विषय का अवबोधन कराया गया। धन्यवाद के बाद शान्ति पाठ द्वारासंगोष्ठी का समापन किया गया।